१९वां विश्व संस्कृत सम्मेलन

❖ 19वें विश्व संस्कृत सम्मेलन का उद्घाटन समारोह, काठमांडू, नेपाल

नेपाल की राजधानी काठमांडू में 19वाँ विश्व संस्कृत सम्मेलन 26 जून 2025 को अत्यंत भव्य और गरिमामय वातावरण में शुरू हुआ। सम्मेलन के अध्यक्ष प्रो. काशीनाथ न्यौपाने जी ने विश्व भर से आए संस्कृत प्रेमियों, विद्वानों और शोधार्थियों का नेपाल में आत्मीय स्वागत किया।

इस अंतरराष्ट्रीय आयोजन में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली की महत्वपूर्ण भूमिका है। विश्वविद्यालय के 200 से अधिक आचार्य और शोधार्थी इस प्रतिष्ठित सम्मेलन में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं।

❖ उद्घाटन सत्र का प्रेरणादायक उद्बोधन

कुलपति प्रो. श्रीनिवास वरखेडी अपने बीजवपन भाषण में कहते हैं कि आज, 26 जून 2025, आषाढ़ मास का प्रथम दिन है, जो संस्कृत साहित्यिक परंपरा में विशेष महत्व रखता है। कालिदास के *मेघदूतम्* का उल्लेख करते हुए वे कहते हैं कि जैसे रामगिरि आश्रम से मेघ हिमालय की ओर संदेश ले गया था, वैसे ही हिमालय की गोद में बसे नेपाल से संस्कृत का संदेश विश्व भर में फैल रहा है। वे इस सम्मेलन को "अभिनव कालिदासों" का मिलन बताते हैं, जो कालिदास से प्रेरित आधुनिक विद्वानों का प्रतीक है।

प्रो. वरखेडी पशुपतिनाथ मंदिर के पंचमुखी शिव के प्रतीक को विद्या के पाँच आयामों—*श्रुत* (सुनी हुई विद्या), *दृष्ट* (देखी हुई विद्या), *मत* (विचार/समझ), *प्राप्त* (प्राप्त कौशल), और *कृत* (व्यावहारिक अनुप्रयोग)—से जोड़ते हैं। वे कहते हैं कि वेदविद्या, दर्शनविद्या, शास्त्रविद्या, कलाविद्या और कृत्रिम बुद्धि (AI) का समन्वय

आज के ज्ञान संसार के लिए आवश्यक है। वे जोर देते हैं: **कृत्रिम बुद्धि के नैतिक उपयोग के लिए नैसर्गिक बुद्धि (*अकृत्रिम बुद्धि*) अनिवार्य है, और यह संस्कृत अध्ययन से ही पोषित होती है।** वे संस्कृत को जीवन के हर क्षेत्र में अपनाने का आह्वान करते हैं।

❖ अन्य प्रमुख वक्ताओं के विचार

परम पूज्य श्री नारायण चिन्न जीयर स्वामीजी अपने अनुग्रह भाषण में कहते हैं कि किसी भी देश का विकास उसकी भाषा से जुड़ा है। वे चीन, जर्मनी और फ्रांस का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि संस्कृत को भारत और विश्व के विकास की आधारशिला बनाना चाहिए, ताकि भारत *विश्वगुरु* बन सके।

नेपाल के राष्ट्रपति श्री रामचंद्र पौडेल कहते हैं कि आज न केवल भारत और नेपाल, बल्कि संपूर्ण विश्व संस्कृत और इसके सांस्कृतिक मूल्यों के महत्व को समझ रहा है। कालिदास के *रघुवंशम्* से उद्धृत श्लोक:

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

(अनुवाद: "इस देश में जन्मे श्रेष्ठ व्यक्तियों से विश्व के सभी लोग उनके चरित्र को सीखें।") का उल्लेख करते हुए वे संस्कृत के संरक्षण और संवर्धन के लिए सामूहिक प्रयासों का आह्वान करते हैं।

सभाध्यक्षा प्रो. दीप्ति त्रिपाठी कहती हैं: **संस्कृत प्रेमियों के साथ-साथ आलोचकों और संशयवादियों को भी ऐसे मंचों पर आमंत्रित करना चाहिए, ताकि संवाद के माध्यम से उनके भ्रम दूर हो सकें।**

❖ सांस्कृतिक कार्यक्रम और सहभागिता

उद्घाटन समारोह के बाद शास्त्रीय संगीत और नृत्य-नाट्य की आकर्षक प्रस्तुतियाँ हुईं। नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति और आचार्य इस आयोजन की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

सम्मेलन में विश्वभर से हजारों संस्कृत विद्वान, शोधार्थी, कुलपति और प्राध्यापकगण सम्मिलित हो रहे हैं। प्रायः पाँच हजार से अधिक प्रतिभागी इस वैश्विक संस्कृत महाकुंभ में भाग ले रहे हैं।